कबीर

(१३९८ -१५१८)

कबीर का जन्म १३९८ में कशी में हुआ माना जाता है। कबीर गुरु रामानंद के शिष्य थे। कबीर ने १२० वर्ष की आयु पाई। जीवन के अंतिम कुछ वर्ष मगहर में बिताए और वहीं चिरनिद्रा में लीन हो गए।

कबीर क्रांतदर्शी कवि थे। उनकी कविता में गहरी सामाजिक चेतना प्रकट होती है। उनकी कविता सहज ही मर्म को छू लेता है। एक ओर धर्म के बाह्याडम्बरों पर उन्होंने गहरी और तीखी चोट की है तो दूसरी ओर आत्मा - परमात्मा के विरह -मिलनके भावपूर्ण गीत गए हैं। वे शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव ज्ञान को अधिक महत्व देते थे। उनका विश्वास सत्संग में था और मानते थे की ईश्वर एक हैं। वह निर्विकार हैं,अरूप हैं। कबीर की भाषा पूर्वी जनपद भाषा थी। उन्होंने जनचेतना को अपने सबद और सखियों के मध्यमा से जन -जन तक पहुँचाया

Like and Subscribe

https://www.youtube.com/watch?v=ZiNcgFbWyr0

स्मृति

Question and Answers

१) भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखके के मन में किस बात का डर था ?
भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखके के मन में भाई साहब की मार का डर था।

२) मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी ?
मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला साँप से फुसकार करवाने के लिए फेंकती थी ?

३)साँप ने फुफकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं’-यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

लेखक ने जब ढेला उठाकर कुएँ में साँप पर फेंका , वह बुरी तरह से घबरा गया , जिससे उसे याद भी नहीं की साँप ने फुफकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, क्योंकि ढेला मारते ही चिट्ठियाँ चक्कर काटती सी टोपी में से कुएँ में जा गिरी थी। इससे उसे लगा मानो वह प्राणहीन हो गया है। लेखक की मनोदशा बहुत ही दयनीय हो गयी थी।

४) किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया?

लेखक को चिट्ठियाँ बड़े भाई ने डाकखाने में डालने के लिए दी थी।लेकिन कुएँ में गिर जाने के कारण, लेखक को भाई कि मार का भय था। अब वे और भी भयभीत हो गए। इसी मनोस्थिति के कारण उसने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का निर्णय किया।

५)साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं?
साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने निम्नलिखित युक्तियाँ अपनाईं?
* लेखक ने डंडे से साँप को दबाने का खयाल छोड़ दिया।
*उसने साँप का फन पीछे होते ही अपना डंडा चिट्ठियों की ओर किया और लिफाफे उठाने की कोशिश की।
*डंडा लेखक की ओर से खींचे जाने पर साँप का आसन बदल गया और लेखक ने तुरंत लिफाफे और पोस्टकार्ड चुने लिया और उसे अपनी धोती के छोर में बांध लिया।

६) कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए

चिट्ठियाँ सूखे कुएँ में गिर गई थीं। और कुएँ में साँप था। कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ लाना साहस का काम था। लेखक ने इस चुनौती को स्वीकार किया। लेखक ने छः धोतियों को जोड़कर डंडा बाँध दिया, एक सिरे को कुएँ में डालकर उसके दूसरे सिरे को कुएँ के चारों ओर घुमाने के बाद गाँठ लगाकर अपने छोटे भाई को पकड़ा दिया। लेखक इस धोती के ज़रिए कुएँ में उतर गया।उसने चिट्ठियों को डंडे से खिसकाने कि कोशिश की साँप ही डंडे से चिपक गया। साँप का पिछला हिस्सा लेखक के हाथ को छू गया, और लेखक ने डंडा भी फेंक दिया। डंडा लेखक की ओर खींच आने से साँप का आसन बदल गया और लेखक ने जल्द ही चिट्टीयोंको चुन लिए और अपनी धोती के छोर से बाँध लिया।

७) इस पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है?

पाठ को पढ़ने के बाद निम्नलिखित बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता ह।

* बच्चों को पेड़ो से बेर जैसे फल तोड़न।
* बच्चे विद्यालय जाते वक्त शोर करते हुए जाते है।
* बच्चे .‘जीव - जंतुओं को परेशान करते हैं।
*माली से बिना पूछे फल तोड़ना पसंद करते हैं।
*गलत काम करने के बाद सजा मिलने से डरते हैं।

८) 'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं'-का आशय स्पष्ट कीजिए।
इस कथन का आशय है कि मनुष्य हर परिस्थिति से निपटने के लिए तरह - तरह के अनुमान लगाते हैं और भविष्य की योजनाएं बनाते हैं। लेकिन उसकी सभी योजनाएं सफ़ल नहीं हो पाती। उसे कभी सफ़लता मिलती है तो कभी विफलता। इससे कई बार मनुष्य दुखी हो जाता है। इस पाठ के लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने हेतु कई तरकीबें लगाई, योजनाएं बनाई और उसमें कई तरह के फेर - बदल भी किए। अंतः उसे सफ़लता प्राप्त हुई।

९) 'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है'-पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

मनुष्य तो कर्म करता है, उसे फ़ल देना तो ईश्वर के ऊपर है। मनचाहे फल को प्राप्त करना मनुष्य के बस की बात नहीं। यह सब तो उसी शक्ति पर निर्भर करता है, जो फ़ल देती है। इस पाठ के लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने हेतु कई तरकीबें लगाई, योजनाएं बनाई और उसमें कई तरह के फेर - बदल भी किए। अंतः उसे सफ़लता प्राप्त हुई। गीता में भी कर्म के महत्व को दर्शाया गया है - ' कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन '।

youtube.com/watch?v=xZdnXvZxTx4&t=1s

Subscribe and link